बहुआयामी समन्वय एवं अन्तर्विभागीय भूमिका

जल निगम

- उच्च जोखिम ग्रामों में पीने के पानी के सभी स्त्रोतों के पानी की गुणवत्ता की जांच के लिये विशेष मुहिम चलायें।
- इण्डिया मार्क II हैण्डपम्प का ही पानी पियें। शैलोपम्प के पानी का प्रयोग न करें।
- पानी की गुणवत्ता की जांच के परिणाम पर आधारित उच्च जोखिम ग्रामों में पीने के पानी के स्त्रोतों के क्लोरिनेशन के लिये उचित कदम उठायें।
- उच्च जोखिम ग्रामों में सभी हैण्डपम्प के टूटे प्लैट्फॉर्म के निर्माण व रखरखाव के लिये विशेष कदम उठायें।

पंचायती राज विभाग

- उच्च जोखिम ग्राम पंचायतों में खुले में शौच करने वाले परिवारों को चिहिन्त करें और उन्हें स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) से जोड़कर उनके घरों में शौचालय बनवायें।
- भोजन से पहले और शौच के बाद साबुन से हाथ धोने के लिये सभी को प्रेरित करें।
- उच्च जोखिम वाले ग्रामों को प्राथमिकता के आधार पर ओडीएफ ग्राम बनायें।
- पर्यावरण स्वच्छता के लिये एक विशेष मुहिम का प्रारंभ करें और इन ग्रामों में ऐसी जगहों की पहचान करें जहां पानी जमने की समस्या है व इस समस्या के निदान के लिये उचित कदम उठायें।
- उच्च जोखिम वाले ग्रामों के फॉगिंग के लिये कार्ययोजना बनायें।
- स्वास्थ्य एवं अन्य सम्बन्धित विभागों के साथ उच्च जोखिम वाले गांवों में चूहे/छुछुन्दर नियन्त्रण के लिये मुहिम चलायें।

महिला एवं बाल विकास

- सभी आंगनवाड़ी केन्द्रों में माताओं के साथ बैठकों का आयोजन कर उन्हें एईएस के बारे में जानकारी दें। इसके लिये यूनिसेफ द्वारा बनाये गयें टूल्स का प्रयोग कर सकते हैं।
- सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं को निर्देशित करें कि वे गृह भेंट के दौरान एईएस सम्बन्धित जानकारी का प्रसार करें।
- कुपोषित बच्चों की विशेष निगरानी रखें क्योंकि वे ज्यादा जोखिम में हैं।

ग्राम विकास

- उच्च जोखिम ग्रामों में ग्रामीण आजीविका मिशन के अर्न्तगत बनाये गयें सभी स्वयं सहायता समूहों को निर्देशित करें कि वे अपने साप्ताहिक बैठकों के एजेन्डा में एईएस के बचाव व उपचार के विषय को प्राथमिकता दें।
- स्वयं सहायता समूहों के खण्ड स्तरीय संघों के लिये एक दिवसीय खण्ड स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन करें।

शिक्षा विभाग

- उच्च जोखिम ग्रामों में प्रत्येक स्कूल से एक शिक्षक को स्वास्थ्य नोडल शिक्षक के रूप में चिन्हित करें।
- चिन्हित स्वास्थ्य नोडल शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये स्वास्थ्य विभाग से समन्वय करें।
- स्कूल को निर्देश दें कि प्रार्थना सभा में एईएस से बचाव व उपचार सम्बन्धित संदेश देना प्रारम्भ करें।
- स्कूलों को निर्देशित करें कि छात्रों को एईएस सम्बन्धित जानकारी देने के लिये स्कूलों में प्रश्नोत्तरी, चित्रकला प्रतियोगिता इत्यादि गतिविधियों का आयोजन करें।
- सभी स्कूल, विशेषकर उच्च प्राथमिक स्कूलों में एईएस से बचाव व उपचार पर विशेष कक्षाओं का आयोजन करें।

स्वास्थ्य विभाग

- जेई टीकाकरण के लिये विशेष मुहिम चलाएं
- चिन्हित उच्च जोखिम वाले ग्राम पंचायतों के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय अभिमुखिकरण प्रशिक्षित एचईओ द्वारा प्रदान किया जाये।
- यह सुनिश्चित करना कि निर्मित सभी आईईसी सामग्री उच्च जोखिम वाले ग्राम पंचायतों के क्षेत्रीय कार्यकर्ता के पास उपलब्ध हो।
- उच्च जोखिम वाले ग्राम पंचायतों में गतिविधियों की समीक्षा के लिये मासिक बैठकों का आयोजन किया जाये।
- तैयार किये गये फॉर्मेट में क्षेत्रीय कार्यकर्ता अपना प्रतिवेदन भरें व एचईओ मॉनिटरिंग चेकलिस्ट का प्रयोग करें।
- उच्च जोखिम वाले ग्राम पंचायतों में हो रही गतिविधियों की दैनिक मॉनिटरिंग के लिये जनपद में एईएस/जेई वॉर रूम स्थापित करें।
- यह सुनिश्चित करें कि एन्सेफलाइटिस उपचार केन्द्र (ETC) और अन्य स्वास्थ्य केन्द्रों में बुखार के उपचार की मांग को पूरा करने के लिये सारी सुविधायें व पर्याप्त सामग्री हो।

दस्तक

दरवाज़ा खटखटाओ, एईएस/जेई को दूर भगाओ

उत्तर प्रदेश

में एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिन्ड्रोम/ जापानीज एन्सेफलाइटिस

नियन्त्रण की तैयारी एवं त्वरित

उपचार के लिये संचार

मानचित्र का पैमाना सही नहीं है

for every child

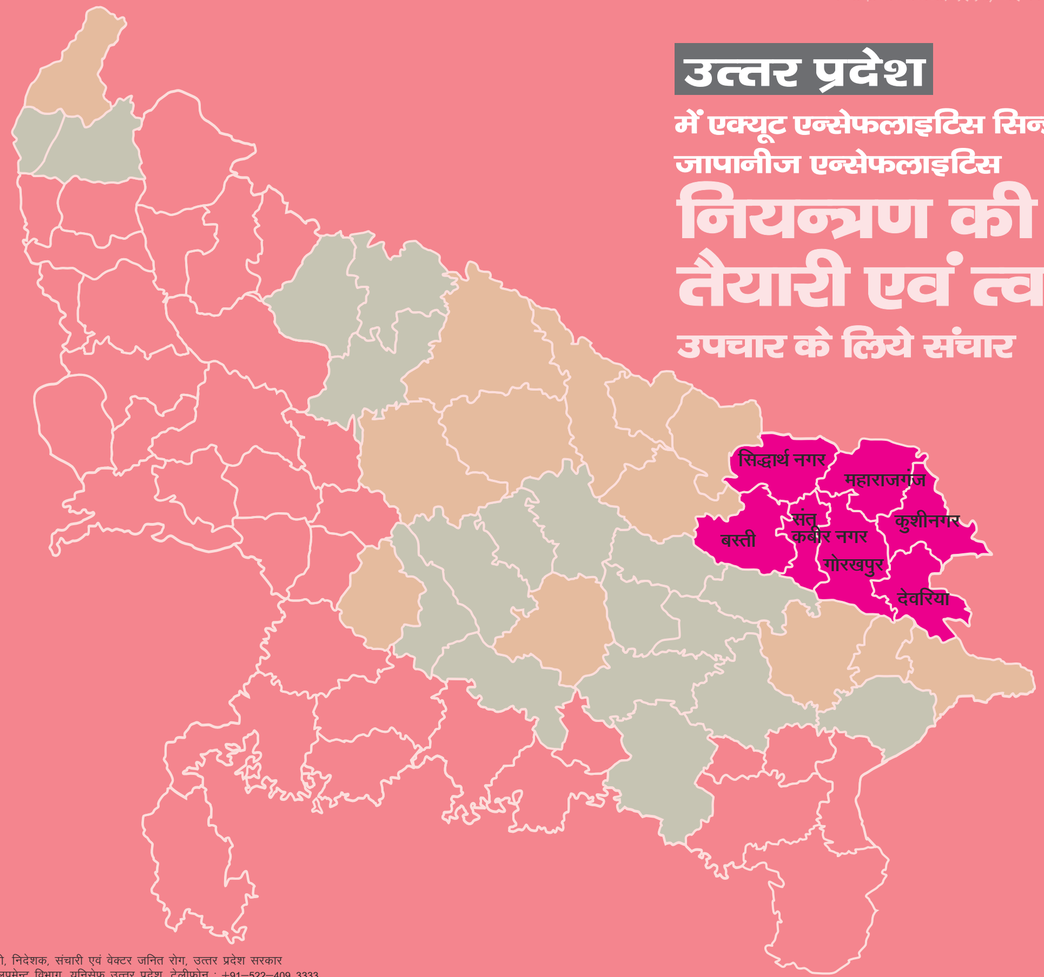

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें: डॉ. मिथिलेश चतुर्वेदी, निदेशक, संचारी एवं वेक्टर जनित रोग, उत्तर प्रदेश सरकार
सम्पर्क : +91–9454455488 और कम्यूनिकेशन फॉर डिवलपमेन्ट विभाग, यूनिसेफ उत्तर प्रदेश, टेलीफोन : +91–522–409 3333

बीमारी की स्थिति

एक्यूट एन्सेफलाइटिस सिन्ड्रोम (दिमागी बुखार) में तेज बुखार के साथ मानसिक स्थिति में बदलाव (लक्षण–दिमाग सही तरीके से काम न करना, भ्रमित होना, शंका में रहना, कोमा में जाना/बेहोशी, बात न कर पाना) शामिल हैं। अक्सर रोगी को शरीर में ऐठन, झटके आना और दौरे पड़ने लगते है। लगभग 100 विभिन्न वायरस, कीटाणु, जीवाणु, परजीवी इत्यादि की वजह से यह बीमारी होती है और महामारी का रूप ले सकती हैं। यह ऐसी घातक बीमारी है, जिसमें रोगी मृत्यु दर 20 से 25 प्रतिशत है।

भारतवर्ष में पूर्वी उत्तर प्रदेश के सीमान्त जिले और बिहार में एईएस का प्रकोप सबसे ज्यादा है। पूर्वी उत्तर प्रदेश विगत चार दशकों से बार–बार एईएस सहित जापानीज एन्सेफलाइटिस (जेई), स्क्रब टाइफस और एन्टेरोवाइरस एन्सेफलाइटिस की चपेट में आ रहा है। पूरे देश में जितने दिमागी बुखार के मामले दर्ज हैं, उनमें से लगभग 60 प्रतिशत मामले उत्तर प्रदेश के इसी क्षेत्र की देन है। 2016 में, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के अनुसार 58.3 प्रतिशत एईएस मामले स्क्रब टाइफस के, 8.3 प्रतिशत जापानीज एन्सेफलाइटिस (जेई) के और 38 प्रतिशत एईएस के ऐसे मामले थे, जिनके कारण अज्ञात हैं।

उत्तर प्रदेश में एईएस का प्रकोप

- मामलों की रिपोर्ट **38 जनपद**
- प्राथमिक क्षेत्र **20 जनपद**
- उच्च प्राथमिक क्षेत्र–गोरखपुर और बस्ती मण्डल के **7 जनपद**

सबसे अधिक प्रभावित कौन

- 1 से 15 वर्ष की उम्र के बच्चे दिमागी बुखार से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं हालांकि 85 प्रतिशत मामले 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के हैं।
- लड़कियों के मुकाबले लड़को में दिमागी बुखार के मामले ज्यादा हैं। (55 प्रतिशत)
- सामाजिक एवं आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों में दिमागी बुखार के मामले ज्यादा हैं।

दिमागी बुखार के लिये

तैयारी और नियन्त्रण रणनीतियां

[1]भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) द्वारा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग को प्रस्तुति, 19 अगस्त 2017

दस्तक अभियान 2018

दरवाज़ा खटखटाओ, एईएस/जेई को दूर भगाओ

बाधायें

जानकारी व जागरूकता: एईएस/जेई के लक्षण, बीमार बच्चे का स्वास्थ्य केन्द्र तक परिवहन, लक्षित समूह केन्द्रित संचार सामग्री की कमी	सेवाओं की मांग: प्रशिक्षित सेवा प्रदाता से उपचार लेने में देरी, अप्रशिक्षित चिकित्सक, नीम–हकीम और ओझा द्वारा अनुचित उपचार	व्यक्तिगत व पर्यावरणीय स्वच्छता: खुले में शौच और असुरक्षित पेयजल। साफ सफाई, स्वच्छता तथा सुरक्षित पेयजल से जुड़ी स्वास्थ्य सेवाओं/योजनाओं की जानकारियों का अभाव	प्रभावी संचार की क्षमता: सेवादाताओं, शिक्षकों, एवं पंचायत प्रतिनिधियों में अंतर्वैयक्तिक संचार कौशल का अभाव और समुदाय को प्रभावी रूप से जानकारी देकर उनमें व्यवहार परिवर्तन लाने की क्षमता में कमी	अन्तरक्षेत्रीय/अन्तर्विभागीय कार्यभूमिका: हितधारकों के द्वारा समन्वित संचार प्रयासों, योजना निर्माण, मॉनिटरिंग की चुनौतियां

दस्तक संचार: 1 से 15 वर्ष के बच्चों के परिवारों और समुदाय तक पहुंचने का अभियान

स्तम्भ 1
मास मीडिया

लोक सेवा विज्ञापन — 75 जनपद
दूरदर्शन, केबल और सेटलाइट टी वी पर हिन्दी व भोजपुरी में विज्ञापन।

रेडियो लोक सेवा विज्ञापन — 38 जनपद
हिन्दी व भोजपुरी में शैक्षणिक रोचक कार्यक्रम, प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा पक्ष समर्थन, रेडियो जॉकी द्वारा एफएम रेडियो, कम्यूनिटी रेडियो पर प्रचार।

समाचार पत्र — 38 जनपद
राज्य स्तरीय दैनिक समाचार पत्र जैसे जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान में विज्ञापन।

मॉनिटरिंग
राज्य स्तरीय संयुक्त मीडिया मॉनिटरिंग।

स्तम्भ 2
सामुदायिक गतिशीलता

नीम-हकीम/बाबा/ओझा — 7 जनपद
दिमागी बुखार पर एवं इसके मामलों की नज़दीकि स्वास्थ्य केन्द्र को तुरन्त सूचना देने के महत्व पर नीम–हकीम/बाबा/ओझा आदि का उन्मुखीकरण।

संचार सामग्री — 7 जनपद
बुखार की जानकारी सम्बन्धित एईएस पोस्टर एवं स्टिकर की 7 जनपदों के नीम–हकीम/बाबा/ओझा आदि को उपलब्ध कराना।

पंचायत प्रतिनिधि और ग्राम प्रधान — 7 जनपद
पंचायती राज संस्थान और सामुदायिक नेताओं के साथ एईएस बैठक कर घर में शौचालय निर्माण और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के लिये प्रेरित करना।
पर्यावरण स्वच्छता के लिये ग्राम प्रधानों और सफाई कर्मियों के साथ गांव और समुदाय स्तर पर बैठक करना।

मॉनिटरिंग एवं रिपोर्टिंग
अभियान की निगरानी और गतिविधियों का प्रतिवेदन देना।
स्थितियों में सुधार के लिये बुखार के मामलों और बीमारी सम्बन्धित डेटा का विश्लेषण।

स्तम्भ 3
घर-घर सम्पर्क और समूह बैठक

घर-घर सम्पर्क — 7 जनपद
वर्ष 2018 के दौरान 41,899 प्रशिक्षित आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और एएनएम कुल 31,67,141 घरों से सम्पर्क करेंगी।

संचार सामग्री — 7 जनपद
कुल 1,65,30,032 परिवारों एवं देखरेख करने वालों को प्रयोग के लिये आईईसी सामग्री उपलब्ध कराना।

लोकप्रिय (सेलिब्रिटी) व्यक्तियों द्वारा गृह भेंट — 7 जनपद
लोकप्रिय व्यक्तियों द्वारा जोखिम क्षेत्रों में घरों से सम्पर्क करना।

मॉनिटरिंग एवं रिपोर्टिंग
अभियान की निगरानी और गतिविधियों का प्रतिवेदन देना।
स्थितियों में सुधार के लिये बुखार के मामलों और बीमारी सम्बन्धित डेटा का विश्लेषण।

स्तम्भ 4
स्कूल से परिवार

संवेदीकरण — 7 जनपद
सोलह लाख स्कूली बच्चों का संवेदीकरण– ताकि वे बुखार वाले मामलों पर नज़र रखें ।

स्कूल स्वच्छता किट — 7 जनपद
उच्च जोखिम वाले जनपदों के 600 स्कूलों में स्कूल स्वच्छता किट उपलब्ध कराना।

स्कूल प्रबन्धन समिति — 7 जनपद
स्कूल प्रबन्धन समिति के सदस्यों का संवेदीकरण और उनके द्वारा स्कूलों में निगरानी और समुदाय का जुटाव।

मॉनिटरिंग एवं रिपोर्टिंग
अभियान की निगरानी और गतिविधियों का प्रतिवेदन देना।
स्थितियों में सुधार के लिये बुखार के मामलों और बीमारी सम्बन्धित डेटा का विश्लेषण।

दस्तक संचार: क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं,स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचना अधिकारियों, स्कूल एवं खण्ड स्तरीय सामुदायिक प्रक्रिया प्रबन्धकों (बीसीपीएम) का क्षमता वर्धन

स्तम्भ 5
क्षमता वर्धन

बाधायें

1. क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं, स्कूल और पंचायती संस्थानों के सदस्यों में अंतर्वैयक्तिक संचार पर क्षमता वर्धन की कमी
2. क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं में प्रभावी और योजनाबद्ध तरीके से समुदाय को जानकारी एवं परामर्श द्वारा प्रेरित करने की सीमित क्षमतायें

प्रशिक्षण एवं रिफ्रेशर

41,899 आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और एएनएम	**193** खण्ड पर्यवेक्षक और बीसीपीएम	**14** जनपद स्वास्थ्य शिक्षा सूचना अधिकारी एवं डीसीपीएम	7 जनपद

नोट: एईएस संचार पैकेज समस्त 38 जनपदों में व्यापक रूप से प्रयोग किया जायेगा।